प्रकाशनार्थ।

श्रीराम कथा

17 जुलाई 2024, गोरखपुर ।

गुरु पूर्णिमा पर्व के पावन अवसर श्रीगोरखनाथ मन्दिर स्थित महन्त दिग्विजय नाथ स्मृति सभागार में साप्ताहिक श्रीराम कथा के तृतीय दिवस में कथा व्यास सन्त हृदय बालकदास जी महाराज ने कहा कि भगवान् की कथा की महिमा तो बहुत है हीं, उसमें भी इस सिद्ध पीठ में भगवान् गुरु गोरक्षनाथ के सान्निध्य में यदि हम प्रभु की कथा सुन रहे हैं तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पीठ पुण्य तीर्थ है, यहाँ किये गये पुण्य का हजारों गुना फल मिलता है।

उन्होने कहा कि भगवान् श्रीराम की कथा हमारे जीवन में सुखों का आराम तथा दुखों का विराम ले आती है। प्रभु राम की कथा हमें न केवल इस लोक में अपितु तीनों लोकों में अभिराम अर्थात् आनन्द को देने वाली होती है।

उन्होंने कहा कि भगवान् के भजन में आसन और आहार का बहुत महत्व है। हम कथा सुन रहे हो या घर में बैठकर भजन कर रहे हैं। हमारा आसन दृण होना चाहिए, जो भक्त आसन पर विजय पा लिया उसकी साधना सफल हो जाती है। इसके साथ हीं हमारा आहार भी शुद्ध व पवित्र होना चाहिए। क्योंकि जैसा हमारा आहार होता है वैसी हीं हमारी बुद्धि भी होती है, और जैसी बुद्धि होती है वैसा हीं विचार हमारे अन्दर आता है तथा जैसा विचार होता है वैसा भाव भी उत्पन्न होता है। भगवान् की भक्ति में भाव हीं प्रमुख है, हम जैसा भाव रखते हैं उस रूप में हमें भगवान् की प्राप्ति होती है।

उन्होंने भगवान् के नाम जप की महिमा बताते हुए कहा कि जैसे हम अनेक विषयों की परीक्षा देते हैं, किन्तु उनमें गणित एक ऐसा विषय है जिसमें हमारा लेखन सुन्दर हो या न हो, यह महत्वपूर्ण नहीं होता अपितु महत्वपूर्ण यह होता है कि हमने सवाल सही लगाया है या नहीं । यदि हमारा उत्तर सही है तो अंक पूरा मिलता है। उसी प्रकार हम वेद,पुराण, स्मृतियाँ पढे हों तो हमें पूर्ण मुक्ति मिले या न मिले किन्तु यदि राम नाम का जप करते हैं तो भगवान् की शरणागति अवश्य प्राप्त होगी।

उन्होंने कहा कि धनी वहीं होता है जिसने राम धन को प्राप्त किया है। लखपति करोड़पति वहीं है जिसने लाखों करोड़ों बार राम नाम का जप किया है। सोना चाँदी रुपये कमाने वाले तो भिखारी होते हैं, उनकी कभी तृप्ति नहीं होती।

कथा व्यास ने भगवान् शिव पार्वती संवाद का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान् शिव निरन्तर राम कथा में मग्न रहते हैं। वो माता पार्वती के कहने पर उनको राम कथा सुनाते हैं और कहते हैं कि यह राम कथा कलियुग के पाप को काटने के लिए कुठार है जिससे बड़े से बड़े पाप को आसानी से काटा जा सकता है।

भगवान् शिव राम कथा के प्रारंभ में प्रभु श्री राम के बाल रूप की वन्दना करते हैं और कहते हैं "बन्दवुं बाल रूप सोई रामू"। बाल रूप की वन्दना करने पर श्रीराम की कृपा शीघ्र प्राप्त होती है।

मानस की चौपाई "हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते प्रकट होंहि मै जाना" का वर्णन करते हुए कथा व्यास ने कहा कि प्रभु सर्वत्र व्याप्त होते हैं। किन्तु उनका दर्शन वहीं होता है जहाँ पर प्रेम होता है, प्रेम में भगवान् को प्रकट करने का सामर्थ्य होता है। इसलिए सभी जीवों से प्रेम करो। हर अवस्था में प्रेम करो, हर स्थान में प्रेम करो, भगवान् आपका कभी साथ नहीं छोडेंगे। भगवान् के हर अवतार में भक्त का प्रेम हीं कारण बना है। अपने भक्त की रक्षा तो भगवान् बिना आये भी कर सकते थे। वो रक्षा करने के बहाने अपने प्रेमी भक्त से मिलने आते हैं।

कथा व्यास ने कार्तिकेय जन्म की कथा,देवर्षि नारद के विवाह का प्रसङ्ग, नारद जी के द्वारा भगवान् विष्णु को नारी विरह का श्राप, श्रीराम जन्म की कथा, सहित अनेक कथाओं का सरस वाचन कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

आज की कथा के विश्राम में गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, कालीबाडी महन्त रविन्द्रदास जी,योगी धर्मेन्द्रनाथ जी , हनुमान मन्दिर के महन्त रामदास, यजमान उमेश अग्रहरी के द्वारा व्यास पीठ की आरती की गयी।

संचालन श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ॰अरविन्द चतुर्वेदी ने किया। यजमानगण, सन्तगण व अनेक श्रद्धालु जन उपस्थित रहे।